पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरण — मॉड्यूल सात — राजा दाऊद

विचार-विमर्श के प्रश्न

1. आपको इस अध्याय में क्या सबसे अच्छा लगा, या आपने क्या सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी? आपके मन में क्या प्रश्न थे?
2. परमेश्‍वर ने दाऊद को उसकी विश्वासयोग्यता के आरंभिक वर्षों में स्पष्ट रूप से आशीष दी। क्या आप मानते हैं कि जब हम विश्वासयोग्य होते हैं तो परमेश्वर हमें हमेशा आशीष देता है और जब हम अविश्वासयोग्य होते हैं तो हमारी ताड़ना करता है? स्पष्ट कीजिए।
3. आप कलीसिया के उस सदस्य से क्या कहेंगे जो उज्जा के सन्दूक को छूने के बाद परमेश्वर के कार्य से बहुत परेशान हुआ?
4. दाऊद ने बतशेबा और ऊरिय्याह के विषय में भयंकर पाप किए। ऐसा कैसे हो सकता है कि परमेश्‍वर ने फिर भी उसे “मेरे मन के अनुसार मनुष्य” कहा (प्रेरितों के काम 13:22)?
5. क्या दाऊद का परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य न रहना आपको निराश करता है या आपके जीवन में आपको प्रोत्साहित करता है? अपने उत्तर को स्पष्ट करें।
6. दाऊद ने अपने पाप के बाद बार-बार मन फिराव और विनम्रता के साथ प्रत्युत्तर दिया। आपके विचार से दाऊद के लिए अपने पाप से मन फिराना कितना कठिन था? आपके लिए यह कितना कठिन है?
7. नातान द्वारा डांटे जाने के बाद दाऊद ने स्वयं को नम्र किया और अपने पाप से मन फिराया। क्या आपके जीवन में कोई ऐसा व्यक्ति है जो प्रेमपूर्वक आपको डांट सके? जब आपको प्रेमपूर्वक डांटा जाता है तो आप कैसे प्रत्युत्तर देते हैं? मसीहियों के रूप में हमारे पास जवाबदेही वाले साथी होना क्यों ज़रूरी है?
8. दाऊद और मपीबोशेत की कहानी पर विचार करें। आपके अनुसार दाऊद ने योनातन से जो शपथ खाई थी, उसका हमारे लिए वर्तमान में क्या प्रयोग है?
9. दाऊद अपने पुत्र अबशालोम की मृत्यु पर बहुत दुखी हुआ, हालाँकि अबशालोम ने उसे मार डालने की कोशिश की थी। इससे हम दाऊद के प्रेम और करुणा के बारे में क्या सीखते हैं? जब आप संबंध रूपी संघर्षों से गुजर रहे हों तो यह आपके लिए क्या उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है?

**समीक्षा कथन :** परमेश्‍वर ने दाऊद के शासनकाल के आरंभिक वर्षों में उस पर अभूतपूर्व आशीषें बरसाईं, क्योंकि वह वाचा की माँगों के प्रति विश्वासयोग्य था, विशेषकर आराधना और राजकीय अधिकार को कार्य में लाने के क्षेत्रों में। शाऊल की मृत्यु के बाद जब दाऊद ने परमेश्वर से मार्गदर्शन मांगा (2 शमूएल 2:1-4), तो परमेश्वर ने उसे यहूदा भेजा, जहाँ यहूदा के लोगों ने हेब्रोन में यहूदा के घराने पर राजा के रूप में उसका अभिषेक किया। दाऊद के प्रतिज्ञा किए पुत्र, यीशु की रीति थी कि वह निर्णय लेने से पहले प्रार्थना में पिता से बात करे और वह उसके प्रति पूरी तरह से विश्वासयोग्य था। अब यीशु अपने लोगों की ओर से पिता के सामने मध्यस्थता करता है, और पिता उसकी सुनता है।

**विषय का अध्ययन 1 :** परमेश्‍वर ने शाऊल को उसके शासनकाल के आरंभ में शत्रुओं पर विजय पाने और राष्ट्रीय एकता की आशीष दी। लेकिन शाऊल यहोवा के प्रति विश्वासयोग्य नहीं था और अंततः उस पर परमेश्वर के शाप आ पड़े। दाऊद को भी परमेश्वर की आशीषें मिलीं और वह परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहा, जिससे परमेश्वर की आशीषें बढ़ती गईं।

**विषय का अध्ययन 2 :**  अल्फोंसो एक पादरी था जिसे प्रभु से बहुत आशीष मिली थी। उसका एक अच्छा परिवार था, बच्चे जो उससे प्रेम करते थे, एक पत्नी जो उससे प्रेम करती थी, एक बढ़ती हुई मंडली थी, और प्रभु उसे कई लोगों को आशीष देने के लिए इस्तेमाल कर रहा था। लेकिन जैसे-जैसे प्रभु की आशीषें बढ़ती गईं, अल्फोंसो को यह महसूस होने लगा कि वह किसी न किसी रूप में अन्य लोगों से बेहतर है। प्रभु के आशीषों ने उसे घमंडी बना दिया। उसने प्रार्थना में प्रभु से बात करना बंद कर दिया। उसने नित्य बाइबल पढ़ना और अपनी पत्नी के साथ प्रार्थना करना बंद कर दिया। वह लोगों के साथ बैठकें करने में अधिक व्यस्त हो गया और अपने उपदेशों की तैयारी में कम समय बिताने लगा। उनके उपदेशों में बाइबल की शिक्षा कम से कम दिखाई देने लगी। अंततः उसने अपनी पत्नी को छोड़कर किसी और को अपना लिया। कलीसिया ने उसे निकाल दिया, लेकिन उसने आधी मंडली को अपने साथ लेकर एक नई कलीसिया बना ली।

**विषय का अध्ययन 3 :**  सीज़र एक पादरी था जिसे प्रभु से बहुत आशीष मिली थी। उसका एक अच्छा परिवार था, बच्चे जो उससे प्रेम करते थे, एक पत्नी जो उससे प्रेम करती थी, एक बढ़ती हुई मंडली थी, और प्रभु उसे कई लोगों को आशीष देने के लिए इस्तेमाल कर रहा था। जैसे-जैसे प्रभु उसे आशीष देता रहा, वह यह देखकर दीन होता गया कि प्रभु उसके प्रति कितना विचारशील और दयालु है। उसने प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य रहने और उसका मार्गदर्शन पाने के लिए और अधिक परिश्रम किया। उसकी कलीसिया इतनी बढ़ गई कि वह एक और कलीसिया भी स्थापित कर सका।

मनन के प्रश्न :

1. शाऊल और दाऊद ने परमेश्वर की आशीषों को कैसे देखा, इस संदर्भ में उनकी तुलना कीजिए।
2. अल्फोंसो और सीज़र ने परमेश्वर की आशीषों को कैसे देखा, इस संदर्भ में उनकी तुलना कीजिए।
3. आपने प्रभु से किस प्रकार की आशीषों का अनुभव किया है?
4. इन आशीषों ने आपको कैसे प्रभावित किया है?
5. कठिन परिस्थितियों या चुनौतियों ने आपको और आपके विश्वास को कैसे प्रभावित किया है?
6. अपने अनुभव के आधार पर, उन तरीकों के बारे में बात करें जिनमें परमेश्वर की आशीषें आप पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं यदि आप परमेश्वर पर भरोसा करना बंद कर देते हैं।
7. अपने अनुभव के आधार पर, उन तरीकों के बारे में बात करें जिनमें कठिन परिस्थितियाँ आपको प्रभावित कर सकती हैं यदि आप प्रभु पर भरोसा करना बंद कर देते हैं।
8. अपने अनुभव के आधार पर, उन तरीकों के बारे में बात करें जिनमें अच्छी परिस्थितियाँ — प्रभु की ओर से मिले दान — आपको राज्य के एक प्रभावशाली दूत बनने में मदद कर सकती हैं।
9. अपने अनुभव के आधार पर, उन तरीकों के बारे में बात करें जिनमें कठिन परिस्थितियाँ आपको बढ़ने और राज्य के एक प्रभावशाली दूत बनने में मदद कर सकती हैं।
10. अपने सीखनेवाले समुदाय में निम्नलिखित पर चर्चा करें : अपने अनुभव के आधार पर, क्या प्रभु की ओर से मिलनेवाली आशीषें हमेशा वे अच्छी वस्तुएँ ही होती हैं जिन्हें आपका समाज महत्व देता है?
11. जब आप किसी विषय पर प्रभु से सलाह लेते हैं, तो क्या आप उसके किसी भी उत्तर को स्वीकार करने के लिए तैयार रहते हैं? उदाहरण दीजिए।

दिए जानेवाले कार्य :

1. पाँच मसीहियों से कहें कि वे उन्हें प्रभु से मिली सबसे बड़ी आशीषों को बताएँ। फिर उनसे पूछें कि इन आशीषों ने उनके आत्मिक जीवन पर क्या प्रभाव डाला है। उनके उत्तर लिखें। बाइबल के दृष्टिकोण से उनके उत्तरों की जाँच करते हुए एक पृष्ठ का सार लिखें।
2. उन सारी आशीषों की एक सूची बनाएँ जो प्रभु से आपको मिली हैं। दूसरे कॉलम में बताएँ कि क्या प्रत्येक आशीष ऐसी है जिसे संसार भी महत्व देता है या नहीं। तीसरे कॉलम में बताएँ कि इस आशीष को पाने से आप पर क्या प्रभाव पड़ा है। प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको विश्वास और निर्भरता के साथ अपनी आशीषें प्राप्त करने में सहायता करे।